मेरिः ।

मलुगे छां खादा समुद्गार यो रिषा ६०॥ रसिदि रसावास व छी आ गर के पिष । यज इंसल कार में कल इंसेन्ट पे जिसे ॥ ६०॥ व रीयान्या गि क्लिक विरिष्ठे व्यक्तियूनिषु । विद्या स्मार किने पुंसि गण ने पुज्ञ पुंस के ॥ ६२॥ विभाव छ पुमान्त्र पेहार में देन पाव के । स्मारेश विभाव छ । अब सर्जर से वाद्य भाउ में देन ध्या के । स्मारेश पाव के पुंसि कूर च छा बिनु निष्ठु ॥ हुए ॥ साधीया न निवा के स्मारेश प्राप्त विद्या स्मारेश पुष्पमा लत्या : सिद्धा से एसे पुंसि धानु प्रभृतिषु निष्ठु ॥ ६५॥ छ मन्मारे पुष्पमा लत्या : सिद्धा से एसे पुंसि धानु प्रभृतिषु निष्ठु ॥ ६५॥ छ मन्मारे पुष्पमा लत्या : सिद्धा नाधीर देवयो : । छ मे धानु सिद्धां ज्यो तिष्म त्यां निष्ठु । स्पेष ॥ दिव्य च छु : छ गंध स्पेमे देनान्ये छ ले जिसे से । स्मान समस्मन्दे निज्ञा पूर्ण नद्भा ल्यो : ॥ ६०॥ हिंगु निर्या स्मानेश हिंगु से पित्र । ॥ स्मानेश हिंगु सिस्पाहिता कर सिस्पाहिता हिंगु सिस्पाहिता कर सिस्पाहिता है । ॥ स्मानेश हिंगु सिस्पाहिता हिंगु सिस्पाहिता है । ॥ सिम्पाहिता हिंगु सिस्पाहिता हिंगु सिस्पाहिता है । ॥ सिस्पाहिता है । सिस्पाहिता सिस्पाहिता है । सिस्पाहिता है । सिस्पाहिता है । सिस्पाहिता सिस्पाहिता है । सिस्पाहिता सिस्पाहिता सिस्पाहिता सिस्पाहिता सिस्पाहिता सिस्पाहिता सिस्पाहिता सिस्पाहिता

इंट्रिश्निक्षां व कृतिस्था व कृतिस्था नवर्गः विकासिक्षां किल्या विकासिक्षां विकासिक्षां विकासिक्षां विकासिक्षा

श्री क्षेत्र क्षेत्र

हान्त्र